बी० ए० पार्ट-II, पेपर - 3 दिनांक - 30/04/2020

डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner

रीतिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक दृष्टि

रीतिकालीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने से पूर्व उस युग की विभिन्न परिस्थितियों का विवेचन करना आवश्यक है। रीति काल की समय सीमा सम्वत् 1700 विक्रमी से 1900 विक्रमी तक मानी जाती है। रीतिकालीन प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि में हमें उस काल की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को लेखा-जोखा कर लेना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(1) <u>राजनीतिक परिस्थितियाँ</u> :— रीतिकाल मुगलों की सत्ता के ~~स्व~~ चरम शैकत का काल है। मुगल साम्राज्य का चरम उत्कर्ष, उत्तरोत्तर ह्रास और फिर पतन भी इसी काल में हुआ। शाहजहाँ के शासनकाल में रीति युग का प्रारम्भ हुआ। राजा और सामन्त अपने दरबारों में गुणीजनो कवियों, कलाकारों को प्रश्रय देते थे। उत्तर भारत के अधिकांश राजपूत राजाओं एवं सामन्तों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। शाहजहाँ के उपरान्त औरंगजेब मुगल शासक बना जो अपनी धर्मान्धता एवं क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था। औरंगजेब को संगीत, कला के प्रति उसे कोई रुचि नहीं थी औरंगजेब अपने जीवन काल में अनेक युद्ध ~~किए~~ किये तथा राज्य का विस्तार भी किया किन्तु मुगल सत्ता के पतन का प्रारंभ भी हो गया। नादिरशाह एवं अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण 1739 एवं 1757 ई. में हुए जिससे मुगल साम्राज्य की कमर टूट गई। अंग्रेजों ने बक्सर की लड़ाई में शाहआलम को पराजित कर मुगल साम्राज्य को अपनी कठपुतली बना लिया

"ग्रीद्धों के नीडों में उलझ रहने लगे और बुलबुलों का स्थान कौओं ने ले लिया" वेश्याओं, तबलचियों एवं सारंगी वादकों का राज्य कार्य में दखल होने लगा और शासन व्यवस्था निरन्तर कमजोर होती गई।

<u>सामाजिक परिस्थितियाँ</u>:— रीतिकाल पर राजा तथा प्रजा की उक्ति पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी। राजा अपने नीतिपालन की ओर ध्यान नहीं देता और न प्रजा अपने नैतिक नियमों का पालन करती थी।

सामन्तवाद का बोलबाला होने से समाज में सामन्तशाही के दोष आ गए थे। सामान्य जनता कष्टों और आघातों से पिसी हुई थी।

धार्मिक परिस्थितियाँ :— अकबर एवं जहाँगीर की उदार नीतियों के कारण हिन्दू और मुसलमानों में निकटता आई थी वह औरंगजेब जैसे धर्मान्ध एवं कट्टर शासक के राज्य में समाप्त हो गई थी। हिन्दी - क्षेत्र में वैष्णव सम्प्रदायों का प्रभाव था किन्तु महन्त एवं पीठाधिकारी लोभवश राजाओं एवं श्रीमन्तों को गुरुदीक्षा देकर भौतिक सुविधाएँ प्राप्त करने की ओर उन्मुख हो चुके थे। राधा कृष्ण की ~~भक्ति~~ शृंगार लीलाओं को भक्ति समझा जाने लगा था तथा मन्दिरों में भी नाच - गाने के आयोजन भक्ति के नाम पर होने लगे थे। कुरान को याद कर लेने एवं नमाज पढ़ने को ही धर्म समझा जाने लगा था केवल बाह्याचरण को ही धर्म माना जाता था नैतिक मूल्यों की ओर ध्यान देने का किसी को अवकाश न था स्थूल ऐन्द्रिकता एवं कामुकता की पूर्ति धर्म की आड़ में की जाती थी। धर्म के उदात्त रूप का इस काल में अभाव था और नैतिक मूल्यों में गिरावट आ गई।

साहित्यिक परिस्थितियाँ :— साहित्य और कला की दृष्टि से रीतिकाल में पर्याप्त प्रगति हुई। इस काल में अलंकारता, कलात्मकता की प्रधानता प्रत्येक क्षेत्र में थी कवियों का ध्यान जनसाधारण की समस्याओं पर

उच्च वर्ग की भावनाओं के अनुरूप श्रृंगार एवं विलास के पंक में फँस गया। इस काल में काव्य भाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रवृत्ति प्रधान थी। जिसमें अलंकरण की प्रवृत्ति प्रधान थी। बादशाहों को कसीदे सुनने का शौक था प्राय:। ऐसे कवि तो जो कसीदे सुनाया करते थे रीतिकाल के कवि अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए काव्य रचना करते थे। वे अपनी बुद्धि का लोहा मनवाने हेतु चमत्कार पूर्ण रचना करने में ही कवि-कर्म की सफलता समझते थे। वे कवि और आचार्य, ~~दोनों~~ दोनों ही बनना चाहते थे, यही कारण है कि उन्होंने लक्षण ग्रन्थों की रचना प्रचुर मात्रा में की है। रीतिकालीन कवि वासना के रस में आकंठ डूबकर, समाज को ऐसा काव्य प्रदान कर रहे थे जो श्रृंगार के संकुचित दायरे में घिरा हुआ था। वे नायिका भेद और अलंकार निरूपण में ही अपनी बुद्धि लगा रहे थे। उनका शास्त्र ज्ञान भी नवीनता से युक्त न होकर संस्कृत काव्यशास्त्र का अनुकरण मात्र था।

Scanned with CamScanner